



मानव जीवन पर कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रभाव

ओम प्रकाश लुक्कड़ *असिस्टेंट प्रोफेसर, गर्वनमेंट कॉलेज मारवाड़ जंक्शन, जिला पाली, राजस्थान, भारत
शोधार्थी, लोक प्रशासन विभाग, जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर, राजस्थान, भारत**Corresponding Author:** *ओम प्रकाश लुक्कड़**DOI:** <https://doi.org/10.5281/zenodo.18019817>**सारांश**

कृत्रिम बुद्धिमत्ता, कंप्यूटर विज्ञान की वह शाखा है जिसमें मशीनों को इंसानों की तरह सोचने, समझने, निर्णय लेने और समस्याओं को हल करने की क्षमता दी जाती है। इसमें मशीनों को इस तरह से प्रोग्राम किया जाता है कि वे इंसानी मास्तिष्क की तरह तर्क, अनुभव, और ज्ञान के आधार पर कार्य कर सकें। कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उद्देश्य मशीनों को स्मार्ट बनाना है, ताकि वे जटिल कार्यों को स्वचालित रूप से और तेजी से कर सकें।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का मानव जीवन पर व्यापक और गहरा प्रभाव पड़ रहा है। इसके विकास ने विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण बदलाव लाए हैं, जैसे स्वास्थ्य सेवाएं, शिक्षा, रोजगार, परिवहन, और मनोरंजन। कृत्रिम बुद्धिमत्ता द्वारा स्वचालन के माध्यम से समय और श्रम की बचत हो रही है जिससे उत्पादकता में वृद्धि हो रही है। उदाहरण के लिए, चिकित्सा क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग बीमारियों की शीघ्र पहचान और उपचार में हो रहा है जिससे रोगियों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार हुआ है।

हालांकि कृत्रिम बुद्धिमत्ता के कुछ नकारात्मक प्रभाव भी सामने आए हैं। रोजगार के क्षेत्रों में स्वचालन के कारण कुछ नौकरियां प्रभावित हो रही हैं, जिससे बेरोजगारी की समस्या बढ़ती जा रही है। फिर भी कृत्रिम बुद्धिमत्ता मानव जीवन को बेहतर बनाने में एक महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में उभर रहा है। यह न केवल जटिल कार्यों को सरल बना रहा है, बल्कि यह नए अवसरों और संभावनाओं के द्वारा भी खोल रहा है, जिससे समाज के विभिन्न क्षेत्रों में सुधार और प्रगति की संभावनाएं बढ़ रही हैं।

Manuscript Information

- ISSN No: 2583-7397
- Received: 12-12-2024
- Accepted: 26-02-2025
- Published: 28-03-2025
- IJCRM:4(SP1); 2025: 193-195
- ©2025, All Rights Reserved
- Plagiarism Checked: Yes
- Peer Review Process: Yes

How to Cite this Article

ओम प्रकाश लुक्कड़ . मानव जीवन पर कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रभाव. Int J Contemp Res Multidiscip. 2025;4(SP1):193-195.

Access this Article Onlinewww.multiarticlesjournal.com**मुख्य शब्द:** कृत्रिम बुद्धिमत्ता, समाज, स्वास्थ्य सेवाएं, शिक्षा, रोजगार, परिवहन, और मनोरंजन

प्रस्तावना

कृत्रिम बुद्धिमत्ता की कई अलग-अलग परिभाषाएँ हैं; कुछ लोग इसे निर्मित तकनीक के रूप में देखते हैं जो कंप्यूटर और मशीनों को बुद्धिमानी से कार्य करने की अनुमति देती है। कुछ लोग इसे ऐसी मशीन के रूप में देखते हैं जो मानव श्रम के स्थान पर पुरुषों के लिए अधिक प्रभावी और लंबित परिणाम वाला काम करती है। अन्य लोग इसे एक प्रणाली के रूप में देखते हैं जिसमें बाहरी डेटा की सही व्याख्या करने, ऐसे डेटा से सीखने और लचीले अनुकूलन के माध्यम से विशिष्ट लक्ष्यों और कार्यों को प्राप्त करने के लिए उन सीखों का उपयोग करने की क्षमता है।

विभिन्न परिभाषाओं के बावजूद, कृत्रिम बुद्धिमत्ता की सामान्य रूप से समझ यह है कि यह मानव जाति की समस्याओं को हल करने और कार्य प्रक्रियाओं को सुविधाजनक बनाने में मदद करने के लिए मशीनों और कंप्यूटरों से जुड़ा है। संक्षेप में, यह मनुष्यों द्वारा डिजाइन की गई और मशीनों द्वारा प्रदर्शित की गई एक बुद्धिमत्ता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग मानव निर्मित उपकरण के इन कार्यों का वर्णन करने के लिए किया जाता है जो मानव मस्तिष्क की प्राकृतिक बुद्धि की संज्ञात्मक क्षमताओं का अनुकरण करता है।

विगत कुछ वर्षों में साइबरनेटिक प्रौद्योगिकी के तेजी से विकास के साथ, कृत्रिम बुद्धिमत्ता को हमारे सभी जीवन क्षेत्रों में देखा गया है, और उनमें से कुछ को अब कृत्रिम बुद्धिमत्ता के रूप में नहीं माना जा सकता है क्योंकि यह दैनिक जीवन में इतना घुलमिल गये हैं कि अब हम इसके आदी हो गए हैं।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रकार

कृत्रिम बुद्धिमत्ता द्वारा प्रदान किए गए कार्यों और क्षमताओं के आधार पर दो भागों में बांटा जा सकता है। पहला कमजोर कृत्रिम बुद्धिमत्ता है, जिसे संकीर्ण कृत्रिम बुद्धिमत्ता के रूप में भी जाना जाता है जिसे चेहरे की पहचान या इंटरनेट खोज या सेल्फ-ड्राइविंग कार जैसे संकीर्ण कार्य करने के लिए डिजाइन किया गया है। वर्तमान में मौजूद कई सिस्टम जो कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग करने का दावा करते हैं, संभवतः एक कमजोर एआई के रूप में काम कर रहे हैं। जो एक संकीर्ण रूप से परिभाषित विशिष्ट कार्य पर ध्यान केंद्रित कर रहा है। यद्यपि यह कमजोर कृत्रिम बुद्धिमत्ता मानव जीवन के लिए सहायक प्रतीत होता है।

दूसरा दीर्घकालिक या मजबूत कृत्रिम बुद्धिमत्ता या कृत्रिम सामान्य बुद्धि है जो मानव द्वारा किए जा सकने वाले किसी भी बुद्धिमान कार्य को समझने या सीखने की क्षमता रखती है, इस प्रकार मानव की सहायता करती है। मजबूत कृत्रिम बुद्धिमत्ता की एक अलग धारणा है कि इसे वास्तव में एक मानव मस्तिष्क होने के लिए प्रोग्राम किया जा सकता है, जो कुछ भी प्रयास करने का आदेश दिया जाता है यहां तक कि उसमें बुद्धिमान होने के लिए, धारणा, विष्वास और अन्य संज्ञात्मक क्षमताएं भी होती हैं जो आम तौर पर केवल मनुष्यों के लिए होती है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता की आवश्यकता

क्या वास्तव में मानव समाज को एआई की आवश्यकता है? यह निर्भर करता है। यदि मनुष्य अपने काम को पूरा करने के लिए और बिना ब्रेक लिए लगातार काम करने के लिए तेज़ और प्रभावी तरीका चुनता है, तो हाँ, यह सही है। यदि मानव जाति प्रकृति की व्यवस्था पर विजय प्राप्त करने की अत्यधिक इच्छाओं के बिना जीवन जीने के प्राकृतिक तरीके से संतुष्ट है, तो ऐसा नहीं है।

इतिहास गवाह है कि मनुष्य जिस कार्य पर काम करता है उसे पूरा करने के लिए हमेशा कुछ तेज़, आसान, अधिक प्रभावी और सुविधाजनक की तलाश में रहता है; इसलिए, आगे के विकास का दबाव मानव जाति को काम करने के नए और बेहतर तरीके की तलाश करने के लिए प्रेरित करता है।

नई चीजें बनाने का आविष्कार मानव प्रगति का कारक बन गया है। प्रौद्योगिकी के योगदान के कारण ही आज हम बहुत आसान और अधिक आरामदेह जीवन का आनंद ले रहे हैं। मानव समाज सभ्यता के आरंभ से ही औजारों का प्रयोग करता आ रहा है और मानव की प्रगति इसी पर निर्भर करती है। 21वीं सदी में रहने वाली मानव जाति को पिछले समय में अपने पूर्वजों जितनी कड़ी मेहनत नहीं करनी पड़ी क्योंकि उनके पास काम करने के लिए नई मशीनें हैं।

इसके अतिरिक्त एआई डॉक्टरों को निदान करने, बीमारियों के स्रोतों का पता लगाने, सर्जरी करने के उपचार के विभिन्न तरीकों का सुझाव देने और यह भविष्यवाणी करने में भी मदद कर रहा है कि क्या उक्त बीमारी जीवन के लिए खतरा है। वाशिंगटन में चिल्ड्रेन नेशनल मेडिकल सेंटर के सर्जनों द्वारा हाल ही में किए गए एक अध्ययन में एक स्वायत्त रोबोट के साथ सर्जरी का सफलतापूर्वक प्रदर्शन किया गया था। टीम ने नरम-ऊतक सर्जरी करने, सुअर की आंत को जोड़ने के लिए रोबोट की निगरानी की और रोबोट ने मानव सर्जन की तुलना में बेहतर तरीके से काम को पूरा किया। यह प्रदर्शित करता है कि रोबोट-सहायता प्राप्त सर्जरी पहले से मौजूद न्यूनतम-आक्रामक सर्जिकल प्रक्रियाओं की सीमाओं को पार कर सकती है और ओपन सर्जरी करने वाले सर्जनों की क्षमताओं को बढ़ा सकती है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का मानव समाज पर प्रभाव सकारात्मक प्रभाव

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का मनुष्यों पर भी कई सकारात्मक प्रभाव पाये गये हैं, विशेषकर स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में। एआई कंप्यूटरों को सीखने, तर्क करने और तर्क लागू करने की क्षमता देता है। वैज्ञानिक, चिकित्सा शोधकर्ता, चिकित्सक, गणितज्ञ और इंजीनियर, जब एक साथ काम करते हैं, तो एक एआई डिजाइन कर सकते हैं जिसका उद्देश्य चिकित्सा निदान और उपचार है, इस प्रकार स्वास्थ्य देखभाल वितरण की विष्वसनीय और सुरक्षित प्रणाली तैयार की जाती है। चूंकि स्वास्थ्य प्रोफेसर और चिकित्सा शोधकर्ता बीमारियों के इलाज के नए और कुशल तरीके खोजने का प्रयास कर रहे हैं, न केवल डिजिटल कंप्यूटर विश्लेषण में सहायता कर सकता है, बल्कि कुछ नाजुक चिकित्सा प्रक्रियाओं को सटीकता के साथ करने के लिए रोबोटिक सिस्टम भी बनाया जा सकता है। निम्न सकारात्मक प्रभाव भी दृष्टिगत हुए हैं।

मीसा स्कीन केयर की कार्यकारी निदेशक कृतिका माथुर का मानना है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने उनके जैसे कई स्टार्ट अप को एक नई दिशा प्रदान की है। जिसका प्रभाव प्रोडक्ट की क्लिंटी पर पड़ा है।

- तेज़ और स्टीक निदान
- सामाजिक रूप से चिकित्सीय रोबोट
- मानवीय थकान से संबंधित त्रुटियों को कम करना
- कृत्रिम बुद्धिमत्ता-आधारित सर्जिकल योगदान
- बेहतर रिडियोलॉजी
- उपस्थिति का आभास

नकारात्मक प्रभाव

- मानव को अपना जीवन यापन करने के लिए मेहनती होना आवश्यक है, लेकिन एआई की सेवा के साथ, हम बिना कोई उपकरण उठाए ही मशीन को हमारे लिए कुछ करने के लिए प्रोग्राम कर सकते हैं। मानवीय निकटता धीरे-धीरे कम होती जाएगी क्योंकि एआई विचारों के आदान-प्रदान के लिए लोगों के आमने-सामने मिलने की आवश्यकता की जगह ले लेगा।
- बेरोजगारी एक ज्वलन्त समस्या हो सकती है क्योंकि कई कार्यों का स्थान मशीनरी ले लेगी। आज, कई ऑटोमोबाइल असेंबली लाइनें मशीनरी और रोबोट से भर गई हैं, जिससे पारंपरिक श्रमिकों को अपनी नौकरी खोने के लिए मजबूर होना पड़ा है।
- धन असमानता पैदा हो सकती है क्योंकि एआई के निवेशक कमाई का बड़ा हिस्सा ले लेंगे। अमीर और गरीब के बीच की खाई और चैड़ी हो जायेगी।
- नए मुद्दे न केवल सामाजिक दृष्टि से, बल्कि एआई में भी सामने आते हैं क्योंकि एआई को प्रशिक्षित किया जाता है और सीखा जाता है कि दिए गए कार्य को कैसे संचालित किया जाए, यह अंततः उस स्तर तक पहुंच सकता है जहां मानव का कोई नियंत्रण नहीं है, इस प्रकार अप्रत्याशित समस्याएं और परिणाम पैदा होते हैं।
- एआई का निर्माण करने वाले मानव स्वामी किसी ऐसी चीज का आविष्कार कर सकते हैं जो नस्लीय पूर्वाग्रह हो या कुछ लोगों या चीजों को नुकसान पहुंचाने के लिए अहंकारी हो। प्रोग्राम द्वारा विनाश के आदेश को पूरा करने के लिए एआई द्वारा कुछ नस्ल या कुछ प्रोग्राम किए गए ऑब्जेक्ट को लक्षित करना संभव है, जिससे सम्पूर्ण विष्व के लिए आपदा पैदा हो सकती है।

निष्कर्ष

एआई हमारी दुनिया में रहने के लिए है और हमें परोपकार, मूल्य निर्धारण, स्पष्टता और जवाबदेही के एआई बायोएथिक्स को लागू करने का प्रयास करना चाहिए। चूंकि एआई में कोई आमा नहीं है, इसलिए एआई की सहानुभूति देने में असमर्थता की कमी को पूरा करने के लिए इसकी बायोएथिक्स को पारलौकिक होना चाहिए। एआई दुनिया की एक वास्तविकता है।

हमें कंप्यूटर को हमारे लिए महत्वपूर्ण निर्णय नहीं लेने देना चाहिए क्योंकि एक मशीन के रूप में एआई में नैतिक रूप से समझने और निर्णय लेने के लिए करुणा और ज्ञान जैसे मानवीय गुण कभी नहीं होंगे।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. रसेल एस., नोर्विंग पी. आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस: ए मॉडर्न अप्रोच. न्यू जर्सी: प्रेंटिस हॉल; 2009.
2. जैरी के. आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस: व्हाट एवरीवन नीड्स टू नो. न्यूयॉर्क: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस; 2016.
3. नीलसन जे. प्रिंसिपल ऑफ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस. कैलिफोर्निया: मॉर्गन कॉफमैन पब्लिशर्स; 1980.
4. दीना बी. माइक्रोसॉफ्ट डेवलपर्स एआई टू डॉक्टर फाइंड द राइट ट्रीटमेंट. ब्लूमबर्ग न्यूज़. 2016.
5. गिब्रेइ. द बैटल फ़ॉर एथिकल एआई एट द वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस. नेचर न्यूज़. 24 जनवरी 2020.
6. निक वाय. द एथिक्स ऑफ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस. मैं: कैम्ब्रिज हैंडबुक ऑफ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस. न्यूयॉर्क: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस; 2014.

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.

CONFERENCE ORGANIZERS

- Desert Research Association (DRA), Headquarters – Jodhpur
- Nehru Study Centre, Jai Narain Vyas University, Jodhpur
- Government Girls College, Jhalamand (Jodhpur)
- Department of Geography, Dr. Bhim Rao Ambedkar Government College, Sri Ganganagar

In Collaboration with Kalinga University, Raipur (Chhattisgarh)

Disclaimer: The views, opinions, statements, and conclusions expressed in the papers, abstracts, presentations, and other scholarly contributions included in this conference are solely those of the respective authors. The organisers and publisher shall not be held responsible for any loss, harm, damage, or consequences — direct or indirect — arising from the use, application, or interpretation of any information, data, or findings published or presented in this conference. All responsibility for the originality, authenticity, ethical compliance, and correctness of the content lies entirely with the respective authors.